Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 21

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

25 मई 2016 ई 28 शअबान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति के लिए क़ुरआन को महान हिदायत के रूप में और ऐसे स्पष्ट चिन्हों के रूप में उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण और सत्य और असत्य में भेद करने वाले विषय हैं। (कुरआन करीम)

रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और शैतान जकड़ दिया जाता है। (हदीस)

रोज़ा से यही मतलब है कि आदमी एक रोटी छोड़कर जो केवल शरीर का पोषण करती है दूसरी रोटी प्राप्त करे जो रूह की शान्ति और तृप्ति का कारण है।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ ؕ فَمَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ مَّرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيۡنَ يُطِيۡقُوۡنَهٗ فِدۡيَةٌ طَعَامُ مِسۡكِيۡنٍ ؕ فَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا فَهُوَ خَيۡرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنۡ تَصُوۡمُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ فِيۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰى وَالۡفُرۡقَانِ ۚ فَمَنۡ شَهِدَ مِنۡكُمُ الشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُ ؕ وَمَنۡ كَانَ مَرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيۡدُ اللّٰهُ بِكُمُ الۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيۡدُ بِكُمُ الۡعُسۡرَ ۖ وَلِتُكۡمِلُوا الۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىۡ عَنِّىۡ فَاِنِّىۡ قَرِيۡبٌ ؕ اُجِيۡبُ دَعۡوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡيَسۡتَجِيۡبُوۡا لِىۡ وَلۡيُؤۡمِنُوۡا بِىۡ لَعَلَّهُمۡ يَرۡشُدُوۡنَ

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं जिस प्रकार तुम से पूर्ववर्ती लोगों पर अनिवार्य कर दिये गये थे ताकि तुम तक़वा धारण करो। गिनती के कुछ दिन हैं। अत: जो भी तुम में से रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। और जो लोग इसकी शक्ति रखते हों, उन पर एक दरिद्र को भोजन कराना फ़िद्य: (प्रायश्चित स्वरूप) है। अत: जो कोई भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है। और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए उत्तम है। रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति के लिए क़ुरआन को महान हिदायत के रूप में और ऐसे स्पष्ट चिन्हों के रूप में उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण और सत्य और असत्य में भेद करने वाले विषय हैं। अत: जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो इसके रोज़े रखे और जो रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती को पूरा करो और उस हिदायत के कारण अल्लाह की बड़ाई बखान करो जो उसने तुम्हें प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो और जब मेरे भक्त तुझ से मेरे बारे में प्रश्न करें तो निश्चित रूप से मैं (उनके) निकट हूँ। जब दुआ करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ का उत्तर देता हूँ। अत: चाहिए कि वे मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लायें ताकि वे हिदायत पायें। (सूरह अल्बकर: 184 से 187)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और शैतान जकड़ दिया जाता है।

(बुखारी किताबुस्सौम)

हज़रत अबु हुरैरह वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला फरमाता है मनुष्य के सब काम उसके अपने लिए हैं मगर रोज़ा मेरे लिए है और मैं ख़ुद उसका बदला बनूंगा अर्थात उसकी इस नेकी के बदले में उसे अपना दीदार नसीब करूंगा। अल्लाह तआला फरमाता है रोज़ा एक ढाल है, अत: तुम में से जब किसी का रोज़ा हो तो न वह बेहूदा बातें करे न शोर और बुराई करे अगर इस से कोई गाली गलोच करे या लड़े झगड़े तो वह जवाब में कहे कि मैंने तो रोज़ा रखा हुआ है। कसम है उस हस्ती की जिसके कब्जा में मुहम्मद की जान है! रोज़ेदार के मुंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी भी अधिक शुद्ध और सुखद है। क्योंकि उसने अपना यह हाल ख़ुदा तआला के लिए किया है। रोज़ा रखने वाले के लिए दो खुशियां भाग्य में हैं एक ख़ुशी यह तब होती है जब वह रोज़ा खोलता है और दूसरी तब होगी जब रोज़ा की वजह से उसे अल्लाह तआला की मुलाकात नसीब होगी।

(बुखारी किताबुस्सौम)

फरमान हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रोज़ा की वास्तविकता से लोग अनभिज्ञ हैं। वास्तविकता यह है कि जिस देश में मनुष्य जाता नहीं और जो संसार से परिचित नहीं उसके हालात क्या बयान करे। रोज़ा इतना ही नहीं कि इसमें व्यक्ति भूखा प्यासा रहता है बल्कि इस की एक वास्तविकता और इसका प्रभाव है जो अनुभव से मालूम होता है इंसान की प्रकृति है कि जितना कम खाता है उतनी नफस की पवित्रता होती है और कश्फ की शक्तियां बढ़ जाती हैं। ख़ुदा तआला की इच्छा इससे यह है कि एक आहार कम करो और दूसरे को बढ़ाओ। हमेशा रोज़ेदार को यह मद्देनजर रखना चाहिए कि इससे इतना ही मतलब नहीं है कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र में व्यस्त रहे और नर्मी और सांसारिक कामों से दूरी प्राप्त हो। अत: रोज़ा से यही मतलब है कि आदमी एक रोटी छोड़कर जो केवल शरीर का पोषण करती है दूसरी रोटी प्राप्त करे जो रूह की शान्ति और तृप्ति का कारण है और जो लोग केवल ख़ुदा के लिए उपवास रखते हैं और केवल रस्म के रूप में नहीं रखते उन्हें चाहिए कि अल्लाह की स्तुति और महिमा और तस्बीह में लगे रहें जिस से दूसरा आहार उन्हें मिल जाए।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 102 संस्करण 2003 ई)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

☆ इस आतंकवाद और चरमपंथ से निपटने के लिये आवश्यक है कि हम उसके कारण और लक्षण की समीक्षा करें।

कनाडा संसद में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लात तआला बेनसरहलि अज़ीज़ का ऐतिहासिक ईमान वर्धक ख़िताब (संबोधन) (अन्तिम भाग-3)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: यह न केवल आज मुस्लिम देशों के लिए खतरा है कि इस समय दुनिया के दंगों का केंद्र बने हुए हैं बल्कि इसका स्कोप इससे कहीं बढ़कर है। जैसा कि हम पेरिस, ब्रसिल्स और अमेरिका में होने वाले हाल आतंकवादी हमले देख चुके हैं। इसी तरह कनाडा में भी पिछले दो वर्षों में छोटे पैमाने पर आतंकवाद की घटनाएं सामने आई हैं जिस से आप सभी अवगत होंगे। दरअसल कनाडा अरब देशों से हज़ारों मील दूर स्थित है लेकिन इसके बावजूद हमें पता है कि मुसलमान युवक यहां आतंकवादी समूहों में शामिल होने के लिए सीरिया और इराक जा पहुंचे हैं। सबसे बढ़कर खतरा की बात यह है कि कनाडा सरकार के अपने आंकड़ों के अनुसार सीरिया और इराक जाने वालों में से बीस प्रतिशत महिलाएं हैं, जिसका मतलब है कि यह महिलाएं न केवल ख़ुद उग्रवाद का शिकार हुई हैं बल्कि उन्होंने अपने बच्चों के मन में भी ज़हर भरा है। इस आतंकवाद और चरमपंथ से निपटने के लिये आवश्यक है कि हम उसके कारण और लक्षण की समीक्षा करें। बड़े खेद की बात है कि पश्चिम में रहने वाले मुसलमानों से अक्सर को वास्तविक इस्लाम का ज्ञान ही नहीं है या इस्लामी शिक्षाओं की बुनियाद की समझ ही नहीं है। अत: उन यह उग्रवाद किसी पंथ या विचारधारा की वजह से नहीं बल्कि उनकी कुंठा की वजह से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मेरे विचार में ऑनलाइन radicalisation या मस्जिदों में घृणा तथा अपमानजनक शिक्षा देने या कट्टरता का साहित्य वितरण के अलावा पश्चिम में रहने वाले युवा मुसलमानों की चरमपंथ धारण करने की एक बड़ी वजह आर्थिक संकट भी है और कई प्रकाशित रिपोर्ट ने इस बात की पुष्टि की है। मुसलमान युवकों की एक बड़ी संख्या ऐसी है जिन्होंने डिग्री तो ले ली है लेकिन अपनी इस शिक्षा के बावजूद उन्हें उचित नौकरियां नहीं मलीं जिस कारण वह बिल्कुल अलग-थलग होकर रह गए हैं। इसलिए उनकी आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे चरमपंथी मौलवियों और आतंकवादी भर्ती करने वालों का आसान शिकार बन गए। इसलिए अगर युवाओं के सुधार के अवसर पैदा किए जाएं और उन्हें रोज़गार मिल जाएं तो यह देश में शांति और सुरक्षित बनाने का माध्यम बन जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर वैश्विक स्तर पर केवल बड़ी शक्तियों और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक संस्थाओं ने हर हाल में अपने बुनियादी सिद्धांतों पर वास्तविक रूप का पालन किया होता तो हम दुनिया के अक्सर भागों में आतंकवाद का घातक रोग न देखते और न ही दुनिया की शांति और सुरक्षा लगातार बर्बाद किया जा रहा होता और हम शरणार्थियों की यह गंभीर समस्या नहीं देखते जिसने यूरोप और अन्य विकसित देशों के लोगों में दहशत फैलाई हुई है। लाखों निर्दोष लोग भागकर यूरोप आ पहुंचे हैं। उनमें से हजारों लोग यहाँ कनाडा में भी इन आतंकवादियों से बचकर आए हैं जिन्होंने उनके देशों को ज़हर से पीड़ित कर दिया है। यद्यपि कि इन शरणार्थियों में अधिकांश शरीफ लोग ही हैं लेकिन जैसा कि हमने हाल ही में यूरोप और कुछ हद तक यहाँ उत्तरी अमेरिका में भी देखा है कि एक दो नकारात्मक घटनाएं भी इन देशों में आतंक फैलाने के लिए पर्याप्त थे। अत: हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि दुनिया में कितनी अनिश्चितता की स्थिति है और कैसे घृणा और बेचैनी दुनिया के अक्सर भागों में फैली हुई है। मैं फिर से कहूँगा कि मुख्य कारण इंसाफ का न होना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस न्याय की कमी के कारण से वैश्विक आर्थिक संकट भी पैदा हो गया है और पिछले कुछ वर्षों में अमीर और गरीब के बीच अंतर पढ़ता चला जा रहा है। मैं तो कहता हूँ कि विकसित और अमीर देशों ने नि:सन्देह ग़रीब देशों में पैसा निवेश किया है लेकिन उन्होंने इन देशों के विकास के नाम पर निजी हितों को प्राथमिकता दी है। विकसित देशों को चाहिए था कि वह लालच तथा ग़रीबी देशों के अधिकारों के शोषण के बजाय उनके अधिकारों की रक्षा करते और उनके विकास के लिए प्रयास करते। उन्हें ग़रीब देशों के लोगों की ईमानदारी के साथ मदद करनी चाहिए थी ताकि वे सम्मान और गरिमा के साथ अपने पांव पर खड़े हो सकते। लेकिन बड़े अफसोस से कहना पड़ रहा है कि ऐसा नहीं हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कुरआन की सूर: ताहा की आयत 132 में अल्लाह तआला आदेश देता है " तुम दूसरों के धन दौलत को अपनी लालच से भरी हुई दृष्टि से न देखो " अगर सारी दुनिया केवल इसी एक सिद्धांत पर चलने वाली हो जाती तो दुनिया की आर्थिक प्रणाली इंसाफ पर स्थापित हो जाती। लाभ समान रूप से विभाजित होता और यह क़ौमें भी अल्लाह की दी गई दौलत तथा धन का मुआवजा पाने वाली बन जातीं और फिर हम यह न्याय देखते कि उत्सुक बनकर हर कीमत पर धन और शक्ति पाने के बजाय वैश्विक व्यापार के पीछे मानव अधिकार अदा करने की लगन होती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस अन्याय का एक उदाहरण हमें दुनिया की राजनीति में भी मिलता है। कुछ देशों में तो तानाशाही और अनुचित सरकारें स्थापित हैं। लेकिन बड़ी शक्तियां उनके ज़ुल्म व बर्बरता से बिल्कुल उदासीन बनी हुई हैं क्योंकि यह सरकारें उनका साथ दे रही हैं और उनके हितों को पाने में उनकी सहायक साबित हो रही हैं। लेकिन दूसरी तरफ ऐसे देशों जिन के लीडर इन बड़ी शक्तियों के सामने सिर नहीं झुकाते तो वहाँ विद्रोहियों को बड़ी खुशी से मदद की जाती है जब तक कि इन सरकारों को परिवर्तन करने की मांग की जाती है। सच तो यह है कि यह सारी सरकारें अपने लोगों के साथ एक जैसा ही व्यवहार कर रही हैं। लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि उनमें से कुछ सरकारें बड़ी शक्तियों के साथ सहयोग कर रहे हैं, जबकि कुछ नहीं कर रहें। उत्तरार्द्ध में ईराक और लीबिया आते हैं जिनकी सरकारें पश्चिमी नीति के परिणाम में समाप्त कर दी गईं। इसी तरह पिछले कुछ वर्षों में सीरिया में भी कोशिशें की जा रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: समय ने यह साबित कर दिया है कि कनाडा के ईराक युद्ध में भाग न लेने का फैसला सही था और कनाडा की सरकार के इस फैसले से भी सहमत हूँ कि जब तक इस विवाद के विशेष परिस्थितियों और इसे सुलझाने के माध्यम स्पष्ट नहीं हो जाते तब तक सीरिया में हवाई हमले बंद कर देने चाहिए। बड़े पैमाने पर संयुक्त राष्ट्र को भी राजनीति, अन्याय और एक प्रकार से उदासीन होकर दुनिया में शांति की स्थापना के लिए भूमिका अदा करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे उम्मीद है और मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला संयुक्त राष्ट्र और दुनिया के अन्य देशों को उसके अनुसार कार्य करने की तौफ़ीक़ दे ताकि वास्तविक और स्थायी शांति की स्थापना हो सके। इसके अलावा अगर कोई रास्ता नहीं है क्योंकि अगर यही स्थिति जारी रहे तो दुनिया तो पहले से ही एक युद्ध की स्थिति में होने वाली शोक दिशा से गुज़र रही है। अल्लाह तआला इस दुनिया के शासकों और नीति निर्माताओं को ज्ञान प्रदान करे ताकि हम अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने पीछे एक ऐसी दुनिया छोड़ कर जाएं जो शांति और समृद्धि की दुनिया हो न कि क्षतिग्रस्त आर्थिक प्रणाली और विकलांग बच्चों वाली।

अंत में मैं एक बार फिर यहां निमंत्रण देने पर आप सभी का शुक्रिया अदा करता हूं। आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब सात बज कर 37 मिनट तक जारी रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का खिताब जैसे ही समाप्त हुआ, हॉल में मौजूद सभी मेहमानों ने खड़े होकर तालियाँ बजाईं। बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इसके बाद डिनर का कार्यक्रम हुआ। भोजन के बाद सभी अतिथि बारी पवित्र अनवर ीदह अल्लाह बनसरह अज़ीज़ से मिले।

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला का यह फज़्ल और एहसान हम पर है कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है आप की बैअत में शामिल हुए हैं। इस बात से जहां हमें अपने ईमानों में बढ़ने का माध्यम होना चाहिए क्योंकि अगर मानने के बाद हम अपने ईमान और विश्वास में नहीं बढ़ते तो मानने का कोई लाभ नहीं। वहाँ बिना किसी हीन भावना और कायरता की भावना के हमें खुलकर इस्लाम का संदेश पहुंचाना चाहिए।

हमारे अहमदी यहां के लोगों से मिलने-जुलने और बेहतर आचरण ग़ैरों को दिखाने में तो बहुत अच्छा कर रहे हैं लेकिन इबादत और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने में वह गुणवत्ता नहीं हैं जो एक अहमदी की होनी चाहिए।

इसी तरह आपस के संबंधों की गुणवत्ता में भी कमी है। ओहदेदारों के साथ आदर से पेश आने में भी कमी है विभिन्न स्थानों पर शिकायतें आती हैं और लोगों के ओहदोदारों के लिए दिल में सम्मान की भावना रखने की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए भी आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस जमाअत को स्थापित करने आए थे वह केवल आस्था का सुधार करने वाली नहीं थी बल्कि हर स्तर और हर लिहाज़ से व्यावहारिक सुधार करने वाली जमाअत थी। अतः तदनुसार हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि हम इसे पाने के लिए कोशिश कर रहे हैं या नहीं?

जमाअत के प्रोग्रामों में शामिल होने वाले ग़ैर मुस्लिमों को जब वास्तविक इस्लाम से परिचित कराया जाता है तो इस का उन पर बड़ा गहरा प्रभाव होता है। कुछ मेहमानों के ऐसे प्रभावों का वर्णन।

मीडिया की विशेष रूप से यह कोशिश होती है कि इस्लाम की अच्छी तस्वीर कभी दुनिया के सामने पेश न हो इसलिए हमारा काम है कि हम इस संदेश को जो मुहब्बत प्यार और सुलह और अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार देने वाला संदेश है उसे फैलाने की कोशिश करते चले जाएं।

किताब इस्लामी उसूल की फलासफी के ग़ैरों पर गहरे प्रभाव का वर्णन। जब पढ़े लिखे लोगों से परिचय हो तो उन्हें यह किताब ज़रूर देनी चाहिए।

अब वास्तविक ज्ञान और इस्लाम की सही तस्वीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान को पढ़कर ही मिल सकती है। याद रखें कि जो निर्णय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किए हैं वही मूल निर्णय और आप के ज्ञान आधारित जो तफसीरें जमाअत में ख़लीफ़ाओं ने की हैं वही वास्तविक तफसीरें हैं उन्हें पढ़ें और अपना ज्ञान बढ़ाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस ज़माने के हकम और अदल बनकर आए थे। हमें यह बात हर समय अपने सामने रखनी चाहिए।

पहली बात तो यह कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा हमें किसी हीन भावना का शिकार होने की ज़रूरत नहीं। दूसरी बात यह भी याद रखनी चाहिए कि जो साहित्य और पुस्तकें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने छोड़ी है उसे पढ़ना और ज्ञान प्राप्त करना वास्तविक इस्लाम के बारे में हमें बताता है। अतः जहां खुद पढ़ें वहाँ दूसरों को भी दें जिनके साथ गहरा सम्बंध है जो नेक प्रकृति हैं उन्हें साहित्य देना चाहिए और रोजमर्रा की समस्याओं और मामलों में उन्हीं के हवाले हमें देने चाहिए और यह आवश्यक है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों और उपदेशों में हर प्रकार के सवालों के जवाब दिए हुए हैं इसलिए मैंने यह कहा था और मैं कहता हूँ कि अध्ययन करना चाहिए। इस्लाम अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए हमें इस अध्ययन की बहुत जरूरत है। फ़िक़्ही मस्लें हैं या रोज़मर्रा के मामलों से जुड़ी बातें हैं या ज्ञान सम्बन्धी मामले हैं यह सब बातें हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साहित्य में मिल जाती हैं और ख़लीफ़ाओं ने इसे अधिक खोलकर वर्णित किया है। अतः इस ओर ध्यान की जरूरत है इसे पढ़ें और उस पर विचार करें।

इसी तरह जो सामाजिक बुराईयां हैं जैसा कि मैंने पहले भी ज़िक्र किया है कि आपस में प्रेम प्यार और भाईचारा के कुछ लोगों में वह स्तर नहीं जो होने चाहिए बल्कि द्वेष ईर्ष्या और वैर पाया जाता है। अतः अपने ग़रेबानों में झांकने की प्रत्येक को ज़रूरत है। दूसरों को न देखें कोई कैसा है अपना सुधार करें ।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 21 अप्रैल 2017 ई. स्थान - राउनहायम ,फ्रैन्कफोर्ट, जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला का यह फज़्ल और एहसान हम पर है कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है आप की बैअत में शामिल हुए हैं। इस बात को जहां हमें अपने ईमानों में बढ़ने का माध्यम होना चाहिए क्योंकि अगर मानने के बाद हम अपने ईमान और विश्वास में नहीं बढ़ते तो मानने का कोई लाभ नहीं। वहाँ बिना किसी हीन भावना और कायरता की भावना के हमें खुलकर इस्लाम का संदेश पहुंचाना चाहिए।

कुछ युवाओं में कई बार यह विचार पैदा हो जाता है लड़कों और लड़कियों दोनों में कि मुसलमानों की जो हालत है और जो फित्ना और शरारत उनकी ओर सम्बंधित ठहराया जाता है इस लिहाज़ से इस कारण से इस्लाम के बारे में ज्यादा बात न करें। यद्यपि बहुमत अल्लाह तआला की कृपा बड़ी सक्रिय है और जो लीफ सेट आदि की रिपोर्ट आती हैं उसमें व्यक्त होता है कि पर्याप्त भाग लिया गया है लेकिन एक ऐसी संख्या भी है जो कई बार किसी न किसी आधार से हीन भावना का

शिकार हो जाती है। मुसलमान कहलाना तो हैं क्योंकि मुसलमान हैं लेकिन इसको अधिक व्यक्त नहीं करते जैसा होना चाहिए। हालांकि दूसरे मुसलमानों के कर्म से तो हमें अधिक साहस पैदा होना चाहिए कि इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दुनिया को दिखाएं और बताएं कि यह इस्लाम की सच्चाई की दलील है क्योंकि जो इस समय मुसलमानों की स्थिति है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि एक समय आएगा जब मुसलमानों में बिगाड़ पैदा होगा। बुराईयां होंगी तथाकथित उलमा इसके जिम्मेदार होंगे।(अल्जामिअ लेशुअबिल ईमान बहीकी हदीस 1763 प्रकाशक मक्तबतुर्शुद नाशेरून 2004 ई) मुसलमानों में दुनियादारी प्रबल हो जाएगी और तब मसीह मौऊद और महदी मौऊद प्रकट होगा और वह इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दुनिया के सामने प्रस्तुत करेगा। इस्लाम के वास्तविक संदेश को वह दुनिया में फैलाएगा और हम अहमदी वह हैं जो इस मसीह मौऊद के मानने वाले हैं और वास्तविक इस्लामी शिक्षा जिसकी सुंदर शैली हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दिखाई और सिखाई उन पर अनुकरण करने वाले हैं। अत: किसी हीन भावना की जरूरत नहीं है।

इसी तरह कुछ लोग इन पश्चिमी देशों में आकर दुनियादारी के परिवेश के प्रभाव में दुनिया के माहौल में अधिक डूब गए हैं और मौखिक तो धर्म को दुनिया में प्राथमिकता का वादा करते हैं लेकिन वास्तव में कर्म इस से अलग हैं। हमारे अहमदी यहां के लोगों से मिलने-जुलने और बेहतर आचरण ग़ैरों को दिखाने में तो बहुत अच्छा कर रहे हैं लेकिन इबादत और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने में वह गुणवत्ता नहीं हैं जो एक के अहमदी होने चाहिए।

इसी तरह आपस के संबंधों की गुणवत्ता में भी कमी है। ओहदेदारों के साथ आदर से पेश आने में भी कमी है विभिन्न स्थानों पर शिकायतें आती हैं और लोगों का ओहदोदारों के लिए दिल में सम्मान की भावना रखने की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए भी आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस जमाअत को स्थापित करने आए थे वह केवल आस्था का सुधार करने वाली नहीं थी बल्कि हर स्तर और हर लिहाज़ से व्यावहारिक सुधार करने वाली जमाअत थी। अत: तदनुसार हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि हम इसे पाने के लिए कोशिश कर रहे हैं या नहीं?

जर्मनी में ज्यों-ज्यों मस्जिदें बन रही हैं और जमाअतें स्थापित हो रही हैं जमाअत का परिचय बढ़ रहा है और इसके साथ ही हम दुनिया की आलोचनात्मक नज़र भी बढ़ती जाएगी। यह स्वाभाविक बात है कि जब हमारी संख्या बढ़ेगी तो दुनिया से परिचय भी हो जाएगा और जब दुनिया से परिचय होगा तो आलोचनात्मक नज़र भी बढ़ेगी और बढ़ती जा रही हैं। तो यह बात हमसे मांग करती है कि हम में से प्रत्येक व्यावहारिक रूपों की गुणवत्ता बढ़ाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के उद्देश्य को पूरा करे।

मैं हमेशा कहता हूँ और फिर याद दिलाता हूं कि कम से कम 99.9 प्रतिशत अहमदियों को इन देशों में आकर बसने की अनुमति मिलना उनकी किसी निजी ख़ूबी की वजह से नहीं है बल्कि अहमदियत के कारण है और इस लिहाज़ से यहां आकर बसने वाला हर अहमदी अहमदियत का ख़ामोश मुबल्लिग़ भी है। अल्लाह तआला की कृपा से यहाँ अक्सर अहमदियों के अच्छे नमूने और अच्छे संबंधों के कारण लोगों में जमाअत का अच्छा प्रभाव है जिस की अभिव्यक्ति विभिन्न मौकों पर हो जाती है।

पिछले कुछ दिनों में यहां विभिन्न शहरों में मस्जिदों के उद्घाटन और मस्जिदों की नींव रखने के कार्यक्रम हुए, उन्हें मौका मिला और वहाँ स्थानीय लोगों की भागीदारी और लोगों के जमाअत के बारे में जो विचार व्यक्त किया था, जो अपने विचार उन्होंने पेश किए और प्रशासन और स्थानीय नेताओं के भी जो विचार थे, जो उन्होंने व्यक्त किए वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से स्थानीय अहमदियों का स्थानीय लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है लेकिन मुझे यह भी एहसास हुआ कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा जिस तरह परिचय लोगों में होना चाहिए था इस तरह नहीं है क्योंकि जब मैं इन मौकों पर इस्लाम की शिक्षा के हवाले से बातें करता हूँ या जब भी मैंने उन लोगों से बातें कीं। कई लोगों ने यही कहा कि इस्लाम इस वास्तविक शिक्षा का हमें नहीं पता था, हमें ज्ञान नहीं था। सब लोगों ने स्पष्ट रूप से इस बात का इज़हार किया कि इस्लाम की सुंदर शिक्षा का यह पहलू तो हमसे छुपा रहे थे हमारे मन में तो इस्लाम की वही अवधारणा है जो मीडिया हमें दिखाता है।

यह भी उन्होंने व्यक्त किया बेशक कुछ अहमदी हमारे परिचित हैं और उनके निमंत्रण पर हम यहाँ आ तो गए हैं लेकिन हमारे मन में विचार थे एक व्यक्तिगत संबंध पैदा होना और आपस में सम्पर्क रखना एक बिल्कुल अलग बात है और जमाअत के रूप में किसी को फंगशन में बुलाना और लेकर आना और जमाअत के बारे में बात करना बिल्कुल और बात बन जाती है। लोग समझते हैं कि ठीक है यह मेरा दोस्त है व्यक्तिगत रूप से अच्छा होगा लेकिन पता नहीं जमाअत के रूप में क्या हालत है और उन के कैसे विचार हैं। यह भी कहीं चरमपंथी तो नहीं हैं? इसलिए उन लोगों के मन में विचार थे। यह सामान्य धारणा और ऐसे विचार दुनिया के हर देश के ग़ैर मुसलमानों में मैंने देखे हैं कि पता नहीं अगर हम मुसलमानों के इस फंगशन में गए तो क्या होगा? शायद आतंकवाद का सामना हो लेकिन यह भी कहा कि आप के फंगशन में शामिल होकर हमें पता चला कि हमारे विचार बिल्कुल ग़लत थे और उन्होंने कहा कि आप कि फंगशन में शामिल होकर हमें यह पता चला कि हमारी सोचें बिलकुल ग़लत थी और आप की बातें सुन कर हमें पता चला कि कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण और प्यार करने वाला धर्म है मुहब्बत फैलाने वाला धर्म है। और कुछ लोगों के कर्मों को इस्लाम की ओर सम्बंधित नहीं करना चाहिए।

यहां भी विभिन्न फंगशनों और दुनिया में और जगह भी ऐसे लोग मिलते हैं जैसा कि मैंने कहा और यह व्यक्त करते हैं, यहां भी इन दिनों में कुछ लोगों ने व्यक्त किया कि आपकी बातें सुनकर हमारे इस्लाम के बारे में केवल संदेह ही दूर नहीं हुए जो संदेह थे या विचार थे केवल वही दूर नहीं हुए बल्कि अगर हमें कभी किसी धर्म की तरफ आने का ध्यान पैदा हुआ तो जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की ओर ही आएंगे। हम से इस्लाम की बातें सुनकर लोग कैसे अपने विचार बदलते हैं उसके कुछ उदाहरण देता हूँ।

पहली मस्जिद शायद वाल्डशड (Waldshut) की थी, वहाँ आए हुए एक साहिब साइमन कलास (Kalus) कहने लगे कि मेरी आज इस्लाम के बारे में धारणा बिल्कुल बदल गई है। जिहाद के वास्तविक अर्थ का आज मुझे पता चला है। जिहाद के इन वास्तविक अर्थों के बाद कोई कारण नहीं है कि जिहाद शब्द सुनकर भय किया जाए बल्कि इसमें कोई डर वाली बात ही नहीं है। कहते हैं यहाँ आने से पहले मेरा विचार था और मैं डर रहा था कि यहां आतंकवादी हमला भी हो सकता है इसलिए मैंने पहले दावत के बाद न आने का फैसला किया लेकिन फिर मेरे एक दोस्त जिसने जमाअत के बारे में कुछ इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त की थीं और वीडियो भी देखी थी उसने मुझे बताया कि यह लोग बड़े शांतिपूर्ण हैं इसलिए उनके फंगशन पर चले जाओ कोई हर्ज नहीं। लेकिन फिर भी कहते हैं डर था लेकिन उन्होंने कहा कि शुक्र करता हूँ मैं धन्यवाद करता हूँ कि आज मैं इस फगशन में शामिल हो गया और शामिल हो कर मुझे पता चला कि आप लोग जीवन लेने वाले नहीं बल्कि जीवन देने वाले हो। इंसानी सहानुभूति और मानवीयता के कार्यों की वजह से दुनिया को जीवन देने वाले हो।

एक डॉक्टर फ्रानर थे कहते हैं कि आज मैंने वह इस्लाम देखा है जो नफरत के माध्यम से नहीं बल्कि प्रेम के माध्यम से फैल रहा है। दूसरी मस्जिद जहां उद्घाटन हुआ वहाँ भी एक महिला कहने लगीं कि जो बातें आज मैंने सुनी हैं कभी किसी मुसलमान नेता से नहीं सुनीं। एक महिला कहने लगीं कि आज मुझे पता चला है कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण और दया का धर्म है और मुझे पता चला है कि इस्लाम पड़ोसियों के अधिकार की कितनी रक्षा करता है।

एक सीरियन मुसलमान फंगशन में शामिल हुए। कहने लगे कि आज का दिन मेरे लिए बड़ा भावनात्मक दिन है मुझे यहाँ आने से पहले बताया गया था या यही विचार था आमतौर पर कि अहमदी मुसलमान नहीं हैं और उन का कुरआन भी अलग है लेकिन आज मुझे पता चला है कि वह सब झूठ है और अहमदी इसी तरह कुरआन पढ़ते हैं और मानते हैं और इसी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानते हैं जिसे बाकी मुसलमान मानते हैं और फिर कहा मुझे मिलने के बाद कि समय के ख़लीफा से मिलने के बाद अब अतिसंभव है कि मैं अहमदी हो जाऊँ।

यही विचार यहाँ जब शिलान्यास किया गया है यहां आए हुए मेहमानों के थे और इसी तरह के मारबर्ग में थे। मारबर्ग विश्वविद्यालय के उपकुलपति कहने लगीं कि इस समय मैं पूरी तरह से भावनाओं से अभिभूत हूँ। जमाअत अहमदिया के ख़लीफा की बात सुनकर और विशेष रूप से मुझे इन बातों पर (जो मैंने वहाँ अपने सम्बोधन में कही थी कि दो जन्नतों की कल्पना प्रस्तुत की थी बल्कि इस्लाम की शिक्षा बताई थी कि दुनिया में भी स्वर्ग है और अगले जहान का भी स्वर्ग है तो कहती हैं) दो जन्नतों की यह जो अवधारणा है कि दुनिया में भी स्वर्ग है और अगले जहान में भी स्वर्ग है। इस के विवरण से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और यह भी कि कैसे इंसान दुनिया की जन्नत प्राप्त कर सकता है जो अगले जहान की जन्नत की पृष्ठभूमि

बनती है। इसी तरह यह भी कहा कि मुझे आज इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत और इस्लाम के प्रारंभिक इतिहास का भी पता चला है और यह भी कि कैसे इस्लाम अधिकार देने की शिक्षा देता है। कहने लगी कि अगर यह सब कुछ दुनिया समझ ले तो दुनिया में अमन और प्रेम और भाईचारा स्थापित हो जाए। यह इतनी भावुक हो रही थीं कि जिन्होंने उनसे बात की है वह कहते हैं कि रोते हुए कहने लगें कि इससे अधिक अब मैं बोल नहीं सकती मेरे में बोलने की शक्ति नहीं है।

अब एक ईसाई महिला एक मुसलमान फंगशन पर आती है पहले उसे इस्लाम की शिक्षा का पता नहीं। परिचय नहीं बल्कि अमीर साहिब ने मुझे बताया कि उन्हें परिचय नहीं और उन्हें तलाश कर रहे थे कि कहां हैं। उपकुलपति हैं, पढ़ी लिखी महिला हैं लेकिन इसके बाद सुना तो इस कदर भावुक हो रही हैं कि अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सक रहीं। तो ऐसी सुंदर इस्लाम की शिक्षा है इसलिए कोई कारण नहीं है कि हमें किसी भी प्रकार की कोई हीन भावना हो, कोई जटिलता हो। एक महिला मिस एस्तेर (Esther) कहने लगें कि आज तुम्हारे ख़लीफा ने मेरे इन सभी सवालों के जवाब दे दिए हैं जो यहाँ अपने दिल में रख कर लाई थी। कहने लगी कि इस बात का डर है कि आज मैंने इतनी सुंदर बातें सुनी हैं और यह सुनकर घर जा रही हूँ लेकिन कोई दूर नहीं कि कल इस्लाम को बदनाम करने वाला कोई व्यक्ति उठे और इस्लाम के नाम पर कोई आतंकवादी हमला करे और लोग उसकी तरफ आकर्षित हो जाएंगे और शांतिपूर्ण संदेश को भूल जाएंगे। यह मुझे दर्द है, यह मुझे दु:ख है।

तो यह भावनाएं हैं जो लोगों के दिलों में पैदा हो रही हैं। इसी तरह की असंख्य टिप्पणियाँ हैं। हर जगह इस तरह टिप्पणियां आई और जैसा कि इस महिला ने कहा कि लोग शांति संदेश को भूल जाएंगे और वास्तविकता यह है कि इसी तरह होता है और मीडिया की विशेष रूप से यह कोशिश होती है कि इस्लाम की अच्छी तस्वीर कभी दुनिया के सामने पेश न हो इसलिए हमारा काम है कि हम इस संदेश को जो मुहब्बत प्यार और सुलह और अल्लाह तआला अधिकार और बन्दों के अधिकार देने वाला संदेश है उसे फैलाने की कोशिश करते चले जाएं।

इस्लाम के नाम पर हर नकारात्मक प्रक्रिया के बाद जो ये तथाकथित मुसलमान करते हैं हमारा काम है कि सकारात्मक शिक्षा दुनिया के सामने पेश करें। जो लोग और अतिथि जो थे विभिन्न फगशनों पर आए या जिनसे संबंध हैं उनसे अब लगातार संपर्क भी रखें। उन पर जो असर हुआ है यह सब क्यों हुआ है। यह क्या कारण है। आख़िर हम भी वही कुरआन पढ़ते हैं जो दूसरे मुसलमान पढ़ते हैं हम भी नमाज़ें उसी तरह पढ़ते हैं जिस तरह दूसरे मुसलमान पढ़ते हैं। इसी शरीयत को मानते हैं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी और आप को अंतिम नबी मानते हैं यह सब प्रभाव इसलिए हुआ कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना और जैसा कि मैंने कहा आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की वास्तविकता खोलकर हमारे सामने रखी कि यह वास्तविक कुरआन की शिक्षा है जिसे फैलाना हर अहमदी का कर्तव्य है।

अत: जहां हमें अपने अंदर व्यावहारिक परिवर्तन पैदा करने की ज़रूरत है वहाँ हमें आप अलैहिस्सलाम के साहित्य के प्रसार की भी ज़रूरत है और यह हमारा काम है बल्कि हमारी ज़िम्मेदारी है।

जैसा कि मैंने बताया कि मारबर्ग में मस्जिद का शिलान्यास रखा गया था। वहाँ कई बहुत से मेहमानों में से विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और छात्र शामिल थे। उप कुलपति भी आई हुई थीं जिनके विचार मैंने बताए हैं। वहाँ विश्वविद्यालय के दो मिस्री प्रोफेसर भी आए हुए थे जो इस्लाम और अरबी पढ़ाते थे। मेरे पूछने पर एक ने बताया कि वह इस्लामी विभाग में इस्लामी फिलासफी पढ़ाते हैं मैंने उन्हें कहा कि क्या आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किताब इस्लामी सिद्धांत के नियम पढ़ी है। कहने लगे नहीं। तो मैंने उन्हें कहा कि यह अवश्य पढ़ें क्योंकि इसके बिना इस्लामी सिद्धांत के नियम की गहराई का ज्ञान हो ही नहीं सकता। आप चाहे जितना मर्ज़ी इधर उधर ज्ञान प्राप्त करते रहें। मुझे आश्चर्य हुआ कि राष्ट्रीय सचिव प्रकाशन साहिब उन्हें साथ लाए हुए थे और विश्वविद्यालय में उनमें से एक शायद छात्र भी रह चुके हैं या हैं लेकिन बहरहाल दोनों से परिचय उनका बहुत गहरा था लेकिन इसके बावजूद यह जानने के बावजूद कि वह क्या पढ़ाते हैं किस subject में उन्हें रुचि है उन्हें यह किताब उन्होंने नहीं दी। बहरहाल मैंने उन्हें कहा कि तुरंत उन्हें इस किताब देने की व्यवस्था करें। कल उनका एक पत्र भी मुझे आ गया कि यह किताबें उन्होंने उन्हें भेज दी हैं। उन्हें अरबी में यह किताब भेजनी चाहिए थी अपनी भाषा में उन्हें अधिक समझ आएगी। यह ऐसी किताब है कि जिसके बारे में कई अरब मुझे लिखते हैं कि इसे पढ़ कर इस्लाम की वास्तविकता का हमें सही पता लगा और कई ईसाई भी और दूसरे लोग भी मुझे लिखते हैं कि उसने हमारी काया पलट दी है। आदरणीय मुस्तफा साबिर साहिब मरहूम जमाअत के बहुत बड़े विद्वान भी थे। उनका बड़ा गहरा ज्ञान था बल्कि इस्लाम का भी बड़ा गहरा ज्ञान रखने वाले थे। वह भी यही कहते थे उन्हें अहमदियत में लाने में सबसे अधिक भूमिका इस पुस्तक ने निभाई है। अत: जब पढ़े लिखे लोगों से परिचय हो तो उन्हें यह किताब ज़रूर देनी चाहिए।

हमारे कुछ विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों का यह विचार है कि शायद पुराने फकीहों (शास्त्रियों) और उल्मा को पढ़कर या पुराने इमामों और वलियों का उल्लेख पढ़कर उनका ज्ञान बहुत बढ़ गया है और उनके ज्ञान का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। इस बारे में शायद उनका ज्ञान बढ़ गया हो लेकिन उनसे अधिक ज्ञान ग़ैर अहमदी उल्मा का है। इसलिए केवल इसे पढ़ कर यह न समझें कि आप आलिम बन गए। यह कीड़ा अगर किसी के दिमाग़ में है तो उसे निकाल देना चाहिए। पुराने उल्मा और वलियों को अब छोड़ कर वास्तविक ज्ञान और इस्लाम की सही तस्वीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान को पढ़कर ही मिल सकती है। याद रखें कि जो निर्णय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किए हैं वही मूल निर्णय हैं और आप के ज्ञान पर आधारित जो तफसीरें जमाअत में ख़लीफ़ाओं ने की हैं वही वास्तविक तफसीरें हैं उन्हें पढ़ें और अपना ज्ञान बढ़ाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस ज़माने के हकम और अदल बनकर आए थे। हमें यह बात हर समय अपने सामने रखनी चाहिए। इसलिए जो कुछ आपने फरमाया है वही सच है और इस्लाम की शिक्षा की वास्तविकता है इसलिए यह न समझें कि दूसरों की किताबें पढ़कर उलेमा की किताबें पढ़कर शास्त्रियों की किताबें पढ़कर पुराने इमामों की किताबें पढ़ कर आप आलिम बन गए। आलिम तब तक नहीं बन सकते जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें नहीं पढ़ते।

अल्लाह तआला ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है इस ज़माने के सुधार न के लिए तो आप को सीधा ज्ञान भी प्रदान फरमाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"जो व्यक्ति ईमान लाता है उसे अपने ईमान से विश्वास और इरफान तक तरक्की करना चाहिए न कि वह फिर कुधारणा में गिरफ्तार हो। याद रखो कुधारणा उपयोगी नहीं हो सकती। ख़ुदा तआला ख़ुद फरमाता है कि इन إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (यूनस : 37) कि भ्रम और कुधारणा जो है सच्चाई के मुकाबला में कोई काम नहीं आ सकती।" फरमाया कि "विश्वास ही एक ऐसी चीज़ है जो इंसान को सफल कर सकती है विश्वास के बिना कुछ नहीं होता। अगर इंसान हर बात पर कुधारणा करने लगे तो शायद एकदम भी दुनिया में न बिता सके।" आप इस का उदाहरण देते हुए फरमाते हैं "एक उदाहरण कि वह पानी भी न पी सके कि शायद इसमें जहर मिला दिया हो। बाज़ार की चीज़े न खा सके कि उनमें मारने वाली कोई चीज़ न हो। फिर कैसे वह जीवित रह सकता है।" फरमाया "यह एक मोटी उदाहरण है। आप फरमाते हैं कि "इसी तरह से मनुष्य आध्यात्मिक मामलों में इससे लाभ उठा सकता है। फरमाया "अब आप ख़ुद सोच लो और अपने दिल में तय कर लो कि क्या तुम ने मेरे हाथ में जो बैअत की है और मुझे मसीह मौऊद हकम अदल माना है तो मानने के बाद मेरे एक निर्णय या कर्म पर अगर दिल में कोई मैल या रंज आता तो अपने ईमान की चिंता करो।" फरमाया कि "वह ईमान जो चिंताओं और अंधविश्वासों से भरा हुआ है कोई अच्छा परिणाम पैदा करने वाला नहीं होगा लेकिन अगर तुम ने सच्चे दिल से स्वीकार कर लिया है कि मसीह मौऊद वास्तव में हकम है तो इस हकम के कर्म के सामने अपने हथियार डाल दो।" चुप हो जाओ जो कहा गया है उस को मानो " और उस के फैसलों को सम्मान की दृष्टि से देखो ताकि तुम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र बातों को सम्मान और गरिमा देने वाले ठहरो।" फरमाया कि "रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गवाही पर्याप्त है वह तसल्ली देते हैं कि वह तुम्हारा इमाम होगा "(जो मसीह मौऊद आएगा वह तुम्हारा इमाम होगा)और वह हकम और अदल होगा। अगर इस पर तसल्ली नहीं हुई तो फिर कब होगी।" फरमाते हैं "यह तरीका हरगिज़ अच्छा और मुबारक नहीं हो सकता कि ईमान भी हो और दिल के कुछ हिस्सों में कुधारणा भी हों। मैं अगर सच्चा नहीं तो जाओ और सच्चा तलाश कर लो और निश्चय समझो कि इस समय और सच्चा नहीं मिल सकता और फिर अगर कोई दूसरा सच्चा न मिले और नहीं मिलेगा तो फिर मैं इतना अधिकार मांगता हूँ जो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे दिया है। जिन लोगों ने मेरा इनकार किया है और जो मुझ पर आपत्ति जताते

हैं उन्होंने मुझे पहचान नहीं और जिसने मुझे पहचाना" (बैअत में आ गया) "और फिर आरोप करता है वह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि देखकर अंधा हुआ।" यह बहुत बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है कि माना भी और फिर कुछ संदेह दिल में हों तो देख कर अंधा हो गया और अधिक गुनाहगार बन गया। फरमाया कि "मूल बात यह है कि द्वेष भी सम्मान को कम कर देता है। एक परिवेश में रहते हैं, साथ रहते हैं वहाँ पता नहीं लगता कि इंसान स्थिति और स्थान पहचान सकते। इसलिए आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का उदाहरण वर्णन करते हैं "इसलिए हज़रत ईसा फरमाते हैं कि नबी का अनादर नहीं होता लेकिन अपने देश में।" फरमाया कि "इससे ज्ञात हो सकता है कि उन्हें देशवासियों से कितने कष्ट और दु:ख उठाने पड़े। अत: यह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के साथ एक आदत चली आती है हम इससे अलग कैसे हो सकते हैं।"

अत: यह जो कहते हैं कि कुछ लोग आपत्ति कर देते हैं कि अहमदियत पर आपत्ति करने वाले या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे पर आपत्ति करने वाले कि उनकी क़ौम के उल्मा ने उन्हें ठुकरा दिया और अहमदियों के ख़िलाफ फैसला दिया कि यह ग़ैर मुस्लिम हैं। इसमें अरब भी शामिल हैं अन्य क़ौमें भी शामिल हैं तो यह दलील उनके लिए पर्याप्त है कि हर जगह हर ज़माने में हर देश में जब नबी आया तो उसे उसके लोगों ने ही अस्वीकार किया। आपने फरमाया कि "हम को जो कुछ अपने विरोधियों से सुनना पड़ा यह इसी सुन्नत के अनुसार है।" बल्कि नबी या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध जो है यह आप की सच्चाई की दलील है क्योंकि अल्लाह तआला की यह आदत नबियों से साथ है कि इसी तरह होता है। आपने फरमाया कि مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ(सूरह यासीन 31) कि और कोई रसूल उनके निकट नहीं आता था मगर वे उसका मजाक करते थे उसकी हंसी उड़ाते थे। आप फरमाते हैं कि "खेद है कि अगर ये लोग साफ नीयत से मेरे पास आते (विरोधियों को मुखातिब होकर फरमाया कि अगर साफ निय्यत से मेरे पास आते तो) "तो मैं उन्हें वह दिखाता जो ख़ुदा ने मुझे दिया है और वह ख़ुदा ख़ुद उन पर अपना फज़ल करता और उन्हें समझा देता मगर उन्होंने कंजूसी और ईर्ष्या से काम लिया। अब मैं उन्हें कैसे समझाऊँ" लेकिन हम जो मानने वाले हैं हमारा काम है कि जब हम आ गए हम ने मान लिया तो उस ख़ुदा से अपना संबंध पैदा करें। दुनियादारी में न पड़ जाएं यह दुनिया अस्थायी है। इसलिए हमें अगले जहान की चिंता करनी चाहिए। आपने फ़रमाया कि "जब इंसान सच्चे दिल से सच्चाई के लिए आता है तो सब निर्णय हो जाते हैं लेकिन जब किसी की निन्दा और शरारत उद्देश्य हो तो कुछ भी नहीं हो सकता।" फरमाया कि "हुजजुल किरामह में इब्न अरबी के हवाले से लिखा है कि मसीह मौऊद जब आएगा तो उसे मफ़्तरी और अज्ञानी ठहराया जाएगा और यहां तक भी कहा जाएगा कि वह धर्म को परिवर्तन करता है।" इस समय ऐसा ही हो रहा है। इस प्रकार के आरोप मुझे दिए जाते हैं इन संदेहों से मनुष्य तब बचाया जा सकता है जब वह अपने इज्तेहाद की किताब ढांप ले" खुद न नए अर्थ निकालता रहे। वह एक तरफ रख दे फरमाया "और उसकी बजाय वह चिंता करे कि क्या यह सच है या नहीं।" यह देखो और इस बात की चिंता करो और अल्लाह तआला से दुआ मांगो कि यह सच्चा है कि नहीं। आप फरमाते हैं कि "कुछ मामले बेशक समझ से ऊपर होते हैं लेकिन जो लोग नबियों पर ईमान लाते हैं वे अच्छी धारणा और धैर्य और दृढ़ता से एक समय इंतजार करते हैं तो अल्लाह तआला उन पर वास्तविक तथ्य को खोल देता है।"

फरमाया कि "रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय सहाबा सवाल न करते थे बल्कि प्रतीक्षा में रहते थे कि कोई आकर सवाल करे तो वे लाभ उठाते थे अन्यथा खुद चुप सिर किए बैठे रहते और सवाल का साहस न करते थे।" फरमाया कि "मेरे पास एक बेहतर उत्तम तरीका यही है कि सम्मान करे। जो नबी के शिष्टाचार को नहीं समझता और उसको धारण नहीं करता आशंका है कि वह हलाक न किया जाए। (मल्फूज़ात भाग3 पृष्ठ 73-75 प्रकाशन 1985 ई यू. के) अपनों को भी साथ नसीहत कर दी कि कुधारणा नहीं होनी चाहिए। अकारण सवाल नहीं होने चाहिए।

पहली बात तो यह कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा हमें किसी हीन भावना का शिकार होने की ज़रूरत नहीं। कुछ मामलों में अगर पुराने बुज़ुर्गों और औलिया की राए हैं तो वे इस हकम और अदल के सामने कोई स्थिति नहीं रखतीं। अगर आप उन लोगों की तुलना में कोई अपनी राय दी है या अपना निर्णय दिया है। इन बुज़ुर्गों ने अपने समय में इस्लाम के लिए काम किया है और बहुत काम किया और उम्मत को अपने अपने दायरे में संभालने की कोशिश की लेकिन अब जब ख़तमुल ख़ुलफा और ख़ातमुल औलिया और मुजद्दिद आख़िर ज़मान और हकम औऱ अदल आ गया तो फिर जो उसके निर्णय हैं और जो उसका ज्ञान है और जो उसने इस्लाम के बारे में बताया है वही सच्च है बाकी सब ग़लत है और हम ने बैअत के बाद इसका पालन करना है। यह हमें याद रखना चाहिए और यही वास्तविक इस्लाम है जिसे दुनिया इस समय पसंद करती है जैसा कि मैंने कहा क्यों हमें लोग पसंद करते हैं इसीलिए कि हम उस इस्लाम को प्रस्तुत करते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें सिखाया। इसके कई कुछ उदाहरण मैंने दिए हैं और कई उदाहरण हैं। जैसा कि मैंने यह भी कहा था दूसरी बात यह भी याद रखना चाहिए कि जो साहित्य और पुस्तकें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने छोड़ी है उसे पढ़ना और ज्ञान प्राप्त करना वास्तविक इस्लाम के बारे में हमें बताता है। अत: जहां ख़ुद पढ़ें वहाँ दूसरों को भी दें जिनके साथ गहरा सम्बंध है जो नेक प्रकृति हैं उन्हें साहित्य देना चाहिए और रोज़मर्रा की समस्याओं और मामलों में उन्हीं के हवाले हमें देने चाहिए और यह आवश्यक है।

अत: हर अहमदी को आप अलैहिस्सलाम के साहित्य से ख़ुद भी अधिकतम लाभ उठाना चाहिए और उसे आगे फैलाना भी चाहिए। हमें इस बात की परवाह नहीं है और न करनी चाहिए कि दुनिया क्या कहेगी। ग़ैर मुस्लिम दुनिया में या सांसारिक लोगों में हमारे बारे में क्या विचार पैदा होंगे। नबियों और अल्लाह तआला के भेजे हुए आते ही उस समय हैं जब दुनिया में दुनियादारी अधिक हो और धर्म में बिगाड़ पैदा होना शुरू हो और बहुमत दुनिया में पड़ कर धर्म को भूल जाती है और उन्हें सही रास्ते पर लाना आने वालों का काम होता है। अत: हमने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर दुनिया के सुधार का बीड़ा उठाया इसलिए विरोध भी होगा दुनिया वाले अपने सांसारिक लाभों और आनन्दों के लिए कानून बनाते हैं। अगर वे कानून ख़ुदा तआला की आज्ञाओं के खिलाफ हैं तो हम ने कानून की सीमा में रहते हुए दुनिया का सुधार करना है और उन्हें सही रास्ता दिखाना है इसमें किसी प्रकार की हीन भावना या डरने की ज़रूरत नहीं है और यह काम हिकमत से करना है।

इसलिए हमें डरने की ज़रूरत नहीं है जो ग़लत है और जिसे धर्म ने ग़लत कहा है उसे हम ने ग़लत कहना है। यह बात हर अहमदी को अपने मस्तिष्क में याद रखनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अधिक सवाल करने से जो अपने समय के लोगों को नबीका उदाहरण दे कर कहा था कि अधिक सवाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे सही आज्ञाकारिता प्रकट नहीं होती। इसलिए फरमाया कि अन्य लोग आकर सवाल करते हैं तो जवाब पर ईमान लाने वालों की भी तसल्ली हो जाती है और नबी की पहचानने की क्षमता ऐसी होती है कि आने वालों के जवाब उनके दिमाग़ों में रखे हुए दे देता है। अगर कुछ आने वाले मुझे ये कह सकते हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बहुत छोटा ग़ुलाम हूँ कि हमारे मन में जो सवाल थे इस तकरीर ने हमारे सवालों के जवाब दे दिए तो नबी के पहचानने की क्षमता बहुत अधिक होती है। इसलिए जवाब देने वालों को बहुत बारीकी में जाकर वह जवाब दे देते हैं। इसलिए यह नहीं समझना चाहिए कि उत्तर कोई नहीं है। उत्तर हैं लेकिन मानने वालों का यह भी काम है कि आज्ञाकारिता के मानकों को भी ऊंचा करना है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने की हज़रत मसीह मौऊद

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

अलैहिस्सलाम की पूर्ण आज्ञाकारिता की और इसका उल्लेख भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया।

(उद्धरित आइना कमाले इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 586)

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजलिसों में बैठते थे और यही रिवायत में आता है कि सिर झुकाकर बैठे रहते थे कभी ख़ुद न बोले न पूछा। (उद्धरित अल्फज़ल 27 मार्च 1957 पृष्ठ 5 जिल्द 77) और जब सवाल करने वाले आते थे, उन से आप लाभ उठाया करते थे या मजलिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने जो उपदेश होते थे उन्हें ध्यान से सुनते थे और उनसे लाभ उठाते थे। यह याद रखें, पहले भी मैंने कहा कि यह बात नहीं है कि इस्लाम में कुछ सवालों के जवाब नहीं हैं। नहीं बल्कि हर बात का जवाब है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों और उपदेशों में हर प्रकार के सवालों के जवाब दिए हुए हैं इसलिए मैंने यह कहा था और मैं कहता हूँ कि अध्ययन करना चाहिए। इस्लाम अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए हमें इस अध्ययन की बहुत जरूरत है। फ़िक़्ही मस्लें हैं या रोज़मर्रा के मामलों से जुड़ी बातें हैं या ज्ञान सम्बन्धी मामले हैं यह सब बातें हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साहित्य में मिल जाती हैं और ख़लीफ़ाओं ने इसे अधिक खोलकर वर्णित किया है। अत: इस ओर ध्यान की ज़रूरत है इसे पढ़ें और उस पर विचार करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई है कि उन्हें कैसा होना चाहिए और उनके ईमान की क्या स्थिति होनी चाहिए। इस संबंध से भी में आप का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूं ताकि हम में से प्रत्येक बैअत का हक़ अदा करने वाला बन जाए। आप अपनी जमाअत को एक बड़ी महत्त्वपूर्ण नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि

"आजकल ज़माना बहुत ख़राब हो रहा है। विभिन्न प्रकार के शिर्क, नए विचार और कई त्रुटियाँ पैदा हो गई हैं। बैअत के समय जो स्वीकार किया जाता है कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दूंगा यह स्वीकार ख़ुदा के सामने कबूल करना है।" ग़ौर करने वाली बात है कि यह ख़ुदा के सामने स्वीकार करना है। "अब चाहिए कि उस पर मौत तक ख़ूब स्थापित रहे अन्यथा समझो कि बैअत नहीं और अगर स्थापित हो जाएगा तो अल्लाह तआला धर्म तथा दुनिया में बरकत देगा।" फरमाते हैं "अपने अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार पूरा विचार करो। ज़माना नाज़ुक है अल्लाह तआला का क्रोध प्रकट हो रहा है और जो अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार अपने आप को बना लेगा वह अपनी जान और अपने परिवार और बच्चों पर दया करेगा।" दुनिया के हालात जो आजकल बिगड़ रहे हैं इस पर विचार करते हुए सबको अल्लाह तआला की ओर बहुत अधिक लौटने की ज़रूरत है। फरमाया "देखो आदमी रोटी खाता है जब तक सैरी के अनुसार पूरी मात्रा न खा ले तो उसकी भूख नहीं जाती। अगर वह एक टुकड़ा रोटी के खा ले (एक टुकड़ा तोड़ कर खा ले।) तो वह भूख से मुक्ति पाएगा? हरगिज़ नहीं और अगर वह एक बूंद पानी अपने गले में डाले तो वह बूंद उसे कभी न बचा सकेगी बल्कि बावजूद इस बूँद के वह मरेगा। फरमाया कि "जान की रक्षा के लिए वह सावधान होना जिस से वह जीवित रह सकता है जब तक न खा ले और न पीए नहीं बच सकता।" जीवित रहने के लिए एक निश्चित मात्रा है वह बहरहाल खानी चाहिए। फरमाया कि "यही हालत आदमी की नेकी की है। जब तक उसकी नेकी इस सीमा तक न हो कि तृप्त हो बच नहीं सकता। नेकी, तक्वा (सदाचार) ख़ुदा की आज्ञाओं का पालन इस सीमा तक करना चाहिए जैसे रोटी और पानी को इस सीमा तक खाते और पीते हैं जिस से भूख और प्यास चली जाती है। फरमाया "ख़ूब याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला की कुछ बातों को न मानना उसकी सब बातों को ही छोड़ना होता है। अगर एक हिस्सा शैतान का है और एक अल्लाह तआला का तो अल्लाह तआला हिस्सेदारी पसंद नहीं करता।" भागीदारी अल्लाह तआला पसंद नहीं करता। फरमाया कि "यह सिलसिला इसी लिए है कि इंसान अल्लाह तआला की तरफ आए। हालांकि ख़ुदा तआला की ओर आना बहुत मुश्किल होता है और एक प्रकार की मौत है लेकिन अंत: ज़िन्दगी भी इसी में है। जो अपने अंदर से शैतान का हिस्सा निकालकर फेंक देता है वह मुबारक आदमी है और उसके घर और नफस और शहर सभी जगह उसकी बरकत पहुंचती है लेकिन अगर इस भाग में थोड़ा आया है तो वह बरकत न होगी। जब तक बैअत का स्वीकार करना व्यावहारिक रूप से न हो बैअत कुछ चीज़ नहीं है। जिस तरह से एक व्यक्ति के आगे आप कई बातें ज़बान से करो लेकिन व्यावहारिक रूप से कुछ भी न करो तो वह ख़ुश नहीं होगा इसी तरह ख़ुदा की बात है वह सभी सम्मान वालों से अधिक सम्मान रखता है। क्या हो सकता है कि एक तो तुम उस की आज्ञा पालन करो उधर उसके दुश्मन की भी मानो इसका नाम तो पाखंड है आदमी को चाहिए कि इस चरण में ज़ैद और बकर की परवाह न करे मरते दम तक इस पर बने रहो।" फरमाया कि "बुराई की दो किस्में हैं ख़ुदा के साथ शिर्क करना उसकी महिमा को न जानना उसकी इबादत और आज्ञाकारिता में सुस्ती करना। दूसरा यह कि उसके बन्दों पर करूणा न करना उनके अधिकार अदा न करने। अब चाहिए कि दोनों प्रकार की त्रुटि न करो। ख़ुदा की आज्ञापालन पर स्थापित रहो। जो अहद तुम ने किया है उस पर बने रहो। ख़ुदा के बन्दों को कष्ट न दो। कुरआन बहुत ध्यान से पढ़ो। उस पर अनुकरण करो। प्रत्येक प्रकार के उपहास और बेहूदा और मुशरिकाना सभाओं से बचो। पांचों वक्त की नमाज़ कायम करो। बहरहाल कोई ऐसा इलाही हुक्म न हो जिसे तुम टाल दो। बदन को भी साफ रखो और दिल को प्रत्येक प्रकार के व्यर्थ द्वेष और ईर्ष्या से मुक्त करो। यह बातें हैं जो ख़ुदा तुम से चाहता है।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 75-76 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अब यह प्रत्येक को अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि किस सीमा तक अपने आप को बेहूदा और मुशरेकाना सभाओं से बचाया हुआ है। कई ऐसे हैं जो कहेंगे हम तो एक ख़ुदा में विश्वास रखते हैं हम तो मुशरिकाना सभाओं में नहीं बैठते लेकिन याद रखें कोई मजलिस हो जैसे इंटरनेट या टीवी या कोई ऐसा काम है और मजलिस जो नमाज़ और इबादत से असावधान कर रही है वह मुशरिकाना मजलिस ही है।

अत: इस गहराई से हमें अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है। आप अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से ध्यान दिलाया कि पांच बार नमाज़ को स्थापित करो और नमाज़ की स्थापना के लिए नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना और नियमित और समय पर अदा करो। मैंने तो समीक्षा की है मुझे तो यहाँ भी इसमें अभी बहुत कमज़ोरी नज़र आ रही है। मुझे दुआ के लिए जब लोग कहते हैं जब पूछा कि तुम ख़ुद दुआ करते हो, नमाज़ें पढ़ते हो, नियमित पढ़ रहे हो तो जवाब नहीं होता है। कि कोशिश करते हैं। तो अगर दुआ के लिए कहने वाले अपने अंदर अपनी परेशानी को दूर करने के लिए दुआ का दर्द पैदा नहीं होता तो दूसरे को कैसे पैदा हो सकता है कि उसके लिए दुआ करे। हाँ ख़ुद अगर अपनी दुआओं का हक़ अदा कर रहे हों तो दूसरों की दुआएं फिर मदद करती हैं और यही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है।

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस 1094)

इसी तरह जो सामाजिक बुराईयां हैं जैसा कि मैं पहले भी ज़िक्र किया है कि आपस में प्रेम, प्यार और भाईचारा के कुछ लोगों में वह स्तर नहीं जो होने चाहिए बल्कि द्वेष ईर्ष्या और वैर पाया जाता है। अत: अपने ग़रेबानों में झांकने की प्रत्येक को ज़रूरत है। दूसरों को न देखें कोई कैसा है अपना सुधार करें। अपना सुधार करलेंगे तो बाकी बुराईयां भी दूर हो जाएंगी। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि मैं हर लिहाज़ से पवित्र हों। अत: हमेशा अपनी कमियों और ग़लतियों के लिए हमें इस्तिग़फार करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इसकी ताकत प्रदान करे और हम वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हक अदा देने वाले हों।

☆ ☆ ☆

रोज़ा के दौरान सभी प्रकार की बुराइयों से बचने की कोशिश करें

उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़

हदीस "वस्सियामो जन्नतुम" अर्थात रोज़ा एक ढाल है की व्याख्या में सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं:

"यह ढाल तो अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमा दी लेकिन इसका इस्तेमाल करने का तरीका भी आना चाहिए। इसके भी कुछ सामान हैं जिन्हें पूरा करना चाहिए तभी इस ढाल की सुरक्षा में तक्वा धारण करने की तौफ़ीक़ मिलेगी। यह ढाल तब तक उपयोगी रहेगी जब रोज़ा के दौरान हम सब बुराइयों से बचने की कोशिश करते रहेंगे। झूठ नहीं बोलेंगे, चुग़ली नहीं करेंगे, और एक दूसरे के अधिकारों का हनन नहीं करेंगे, अपने शरीर के हर अंग को इस तरह संभाल कर रखेंगे जिससे कभी कोई दुरुपयोग न हो। प्रत्येक दूसरे के दोष देखने के बजाय अपने दोष देख रहा होगा। एक दूसरे की बुराइयां तलाश करने की बजाय अपनी बुराइयों, कमियों, कमज़ोरियों और कमियों को ढूंढ रहा होगा ... जब रोज़ों में इस तरह अपनी समीक्षा ले रहे होंगे, कान, आंख, जीभ, हाथ से दूसरे को न केवल सुरक्षित रख रहे होंगे बल्कि उसकी मदद कर रहे होंगे तो रोज़े तक्वा में बढ़ाने वाले होंगे और अल्लाह तआला के यहाँ अत्यधिक इनाम पाने वाले होंगे।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 7 अक्तूबर 2005 ई)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 25 May 2017 Issue No. 21

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हमारा ख़ुदा

कलाम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा

(आपने विशेष रूप से अहमदी बच्चों को याद करने के लिए यह ऩज़्म लिखी थी)

मेरी रात दिन बस यही इक दुआ है
कि इस आलमे-कौन का इक ख़ुदा है।
उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को,
सितारों को सूरज को और आसमां को।
वह है एक उसका नहीं कोई हमसर
वह मालिक है सबका वह हाकिम है सब पर।
हर इक शै को रोज़ी वह देता है हर दम,
ख़ज़ाने कभी उसके होते नहीं कम।
वह ज़िन्दा है और ज़िन्दगी बख़्शता है,
वह क़ायम है हर एक का आसरा है।
कोई शै नज़र से नहीं उसके मख़्फ़ी,
बड़ी से बड़ी हो कि छोटी से छोटी।
दिलों की छुपी बात भी जानता है,
बुरे और नेकों को पहचानता है।
वह देता है बन्दों को अपने हिदायत,
दिखाता है हाथों पे उनकी करामत।
है फरियाद मज़लूम की सुनने वाला,
सदाक़त का करता है वो बोल बाला।
गुनाहों को बख़्शिश से है ढांप देता,
ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता।
यही रात दिन अब तो मेरी सदा है,
ये मेरा ख़ुदा है, ये मेरा ख़ुदा है।

ग़ैर अहमदी मौलवी से निकाह पढ़वाने वाले

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ फर्माते हैं :-

"शादी करना एक उत्तम कर्म है। अल्लाह तआला ने भी इस ओर ध्यान दिलाया है और आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस ओर ध्यान दिलाया है बल्कि ख़ुदा तआला ने विधवाओं को एक तरह का आदेश दिया है कि वे शादी करें और उसके परिजन उसके रास्ते में रोक न बनें। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपने साहाबा को तहरीक फर्माते, शादी की प्रेरणा दिलाते थे, रिश्ते भी सुझाव फर्माते थे। लेकिन यही उत्तम प्रक्रिया कुछ रूपों में कई अहमदी परिवारों के लिए परीक्षा बन जाती है और इस में जमाअत के निज़ाम का कोई दोष नहीं होता लेकिन कुछ लोग जमाअत के निज़ाम को भी आरोप देते हैं और यह तब होता है जब एक व्यक्ति अपनी इच्छा से किसी जमाअत के बाहर की लड़की या औरत से शादी करता है और इस डर से कि जमाअत का निज़ाम बुरा मनाऐगा और मुझे अनुमति नहीं मिलेगी या कभी कभी जमाअत के बाहर वालों से लड़की वालों की तरफ से भी यह शर्त रख दी जाती है कि निकाह जमाअत से बाहर का मौलवी या कोई व्यक्ति पढ़ाए तो ऐसे लोग जमाअत से बाहर से निकाह पढ़वा लेते हैं और एक ऐसी गलती करते हैं जो उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत से बाहर निकाल देती है। क्योंकि यह निकाह पढ़ाने वाले व्यक्ति वह होते हैं, या होता है जिस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इन्कार किया हुआ होता है। आपका इन्कार करने वाले हैं। मानो वास्तव में ऐसा अहमदी लड़का या उसका परिवार जो इसकी शादी में उसका सहायक होता है यह घोषणा करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत से बाहर निकल कर मौलवी से निकाह पढ़वा कर नाऊज़ बिल्लाह आपका इन्कार और झुठलाता है। ऐसे व्यक्ति आस्था की दृष्टि से आप के दावा मसीहियत और महदवियत से इनकार कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने एक इन्कार करने वाले और झुठलाने वाले मौलवी को आप के मुक़ाबले पर खड़ा किया है और जब इस बात पर जमाअत से बाहर हो जाता है तो कहते हैं कि हम पर अत्याचार हुआ है। निकाह तो हम ने मसनून तरीके से पढ़ाया था। अगर किसी के बाप को कोई बुरा भला कहने वाला हो तो उस पर तो मरने मारने पर तुल जाते हैं लेकिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए सम्मान का प्रश्न आता है तो ऐसे लोगों की ग़ैरतें मसलहतें और इच्छाओं का शिकार हो जाती हैं। अगर ऐसी कोई मजबूरी की स्थिति है तो ऐसे लोग अनुमति लेकर अहमदी से निकाह पढ़वा लें तो अपने ईमान को बचाने वाले होंगे और परीक्षा से भी बच जाएंगे। दूसरे ऐसे लोगों को हमेशा यह सोचना चाहिए कि आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने के बताए हुए सुंदर सिद्धांत के अनुसार अपनी इच्छाओं और नफसों का शिकार होने के बजाय धार्मिक पहलू को देखा करें और अहमदी परिवारों में रिश्ता करें। नेक और धार्मिक लड़की की खोज करें तो न केवल परीक्षा से बच जाएं बल्कि अपने परिवारों को भी परीक्षा से बचाने वाले हों बल्कि इनाम कमाने वाले होंगे।"

(ख़ुत्बा जुमअ: 4 जूलाई 2008)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad